

मूल्य ३० रु./पृष्ठे १०४

जानेवारी २०१७

वर्ष १० वे/अंक १

राष्ट्रवादी

स्वाभिमानी आचार!

राष्ट्रवादी विचार!!

नोटाबंदीमुळे
आर्थिक
आणीबाणी

पिसवा
मारण्यासाठी
क्षेपणास्त्रे!





भाऊंची सृष्टी...

जैन इरिगेशनचे संस्थापक अध्यक्ष कै. भवरलाल जैन यांच्या ८० व्या जन्मदिनानिमित्ताने जळगाव येथे 'भाऊंची सृष्टी... भाऊंची वाटिका' हा जो कार्यक्रम झाला. त्यावेळी झालेली काही निवडक भाषणे...

अशोक जैन, अध्यक्ष- जैन इरिगेशन जळगाव

आदरणीय मोठ्याभाऊंच्या ८०व्या जन्मदिनानिमित्त आपण सर्व इथे एकत्रित झालो. कर्तृत्ववान, कर्तबगार माणसं आपल्या ध्येयध्यासामुळे, कृतिशीलतेमुळे आणि द्रष्ट्या

विचारांमुळे संजीवक राहतात. आपण सर्व ज्या सद्भावनेने इथे एकत्र आला आहात ती सद्भावना भाऊंच्या सज्जन मनोवृत्तीचे अनमोल सांस्कृतिक संचित आहे. पिढ्यानपिढ्या हे ऋणानुबंध वाढतच जातील असा विश्वासही आम्ही व्यक्त करतो.

श्रमातून झिरपणाऱ्या आनंदासाठी 'श्रमू या' हा नित्यपाठ इथे गेली पन्नास वर्षे सुरू राहिला. Work is Life आणि Life is Work या शब्दांचा परिसस्पर्श स्वतःसह हजारो लोकांच्या आयुष्याला भाऊंनी करून दिला. कृषी क्षेत्रासाठी समर्पित, सदैव कार्यरत राहणारं कणखर नेतृत्व भाऊंच होतं.



जैन इरिगेशनचे संस्थापक अध्यक्ष कै. भवरलाल जैन यांच्या ८० व्या जयंतीनिमित्त १२ डिसेंबर २०१६ रोजी जळगाव येथे ५०० एकर अशा नावाने संबोधिल्या जाणाऱ्या जागेवर 'भाऊंची सृष्टी... भाऊंची वाटिका' उभारून वृक्षारोपणाचा भव्य कार्यक्रम साजरा करण्यात आला. या ठिकाणी नक्षत्र गार्डन, तीर्थकर गार्डन व रोपवाटिका उभारण्यात येणार आहे. या कार्यक्रमाचा हा संक्षिप्त वृत्तांत.

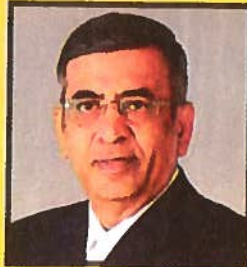
भाऊंची वाटिका

त्यांच्या संवेदनशील मनामुळे लाखो लोकांच्या जगण्याचं सोनं झालं.

भाऊंनी आम्हाला काय दिलं? जगावं कसं याची दृष्टी दिली. देत राहण्याचा' संस्कार दिला. आयुष्यभर सातत्याने सुरू राहिलं अशी आदर्श कार्यसंस्कृती दिली. संकटांनी डगमगून न जाण्याची निर्भयताही दिली आणि यशोशिखरावर पोहोचल्यावरही स्थिर आणि संयमी राहण्याची वृत्तीही दिली.

मोठ्याभाऊंनी हजारो माणसं जोडली. जोडलेली-मानलेली नाती रक्ताच्या नात्याइतकीच

सुहृद मनाने सांभाळली-जोपासली. मोठ्याभाऊंच्या पावलावर पाऊल ठेऊन चालणं म्हणजे पूर्वदिशेच्या उषःकालाची अनुभूती घेणं आहे! भाऊंनी दिलेला वसा आणि वारसा आम्हाला जपायचा आहे.



आपण जिथे उपस्थित आहोत, ही पावनभूमी, या पावनभूमीमध्ये भाऊंनी गेली सहा वर्षे अथक परिश्रम घेतले. एक नविन चैतन्य निर्माण केलं. भाऊंचा मानस या ठिकाणी एक पाणी आणि शेती निगडीत विश्वविद्यापीठ निर्माण करण्याचा होता. या बरोबरच अपारंपारिक



भवरलाल जैन यांच्या स्मृतीप्रित्यर्थ त्यांच्या कुटुंबियांनी वडाचे झाड लावले. या झाडाखाली भाऊंची रक्षा टाकण्यात आली.

ऊर्जा आणि ग्रामीण भागाचा विकास या विषयांमध्येही बरेचसे पुढचे काम भाऊंना करायची इथे इच्छा होती. आज आपल्या सर्वांच्या साक्षीने या ५०० एकराच्या परिसराला, या पावनभूमीला आपण आजपर्यंत ५०० एकर अशा नावाने संबोधित होतो आणि त्याचप्रमाणे ते नाव रूळत गेलं. परंतु आज आपल्या सगळ्यांच्या उपस्थितीत, आपल्या सगळ्यांच्या साक्षीने या संपुर्ण ५६० एकराच्या परिसराला भाऊंची सृष्टी म्हणून नामकरण करण्याच मी इथे आपल्या सगळ्यांच्या समोर जाहीर करतो. ही सृष्टी नेहमीच बहरत राहील, लहरत राहील या ठिकाणी साक्षात मूर्तिमंत भाऊ आपणा सर्वांना जाणवतील. या भाऊंच्या सृष्टीतच एक अनोखे उद्यानही साकारले आहे. आपण सर्वांनी आताच तथे पवित्र वृक्षांचे रोपण केले आहे. ही आहे भाऊंची वाटिका. या वरच्या साडे तीन एकराच्या परिसराला आपण भाऊंची वाटीका असे नाव दिलेले आहे. आणि या संपूर्ण परिसराला भाऊंची सृष्टी असे नाव दिलेले आहे. भाऊ या सृष्टीचे, वाटिकेचेच एकरूप-एकजिनसी स्वरूप आहे. आज या आनंदमयी आणि ऐतिहासिक क्षणाला आपण सर्व उपस्थित राहिलात आणि हा संस्मरणीय क्षण हा दिवस केल्याबद्दल

मी आपणा सर्वांविषयी कृतज्ञा व्यक्त करतो. भाऊंना शतशः प्रणाम करतो आणि इथे थांबतो.

अॅड. उज्वल निकम, भारतीय सरकारी वकिल



सच मे तो मैं वकील हूँ, और वकील को भाषण की तो आदत रहती नहीं और मुक्त मे बोलना तो बिल्कुल आता नहीं। लेकिन आज मैं वकील के हैसियत से यहाँ नहीं आया हूँ यहाँ जो आया हूँ वो स्मृतीस्थान

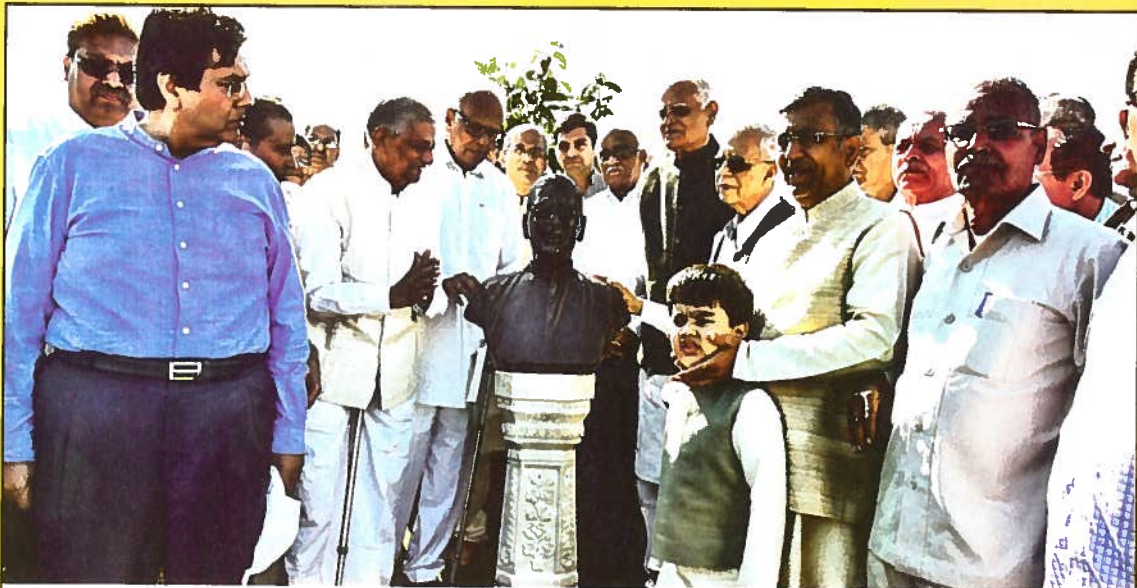
के लिए। मुझे याद है की १९९३ मे जो बॉम्बे मे बाँब ब्लास्ट बारा जगह हुये थे जिस ट्रायल मे मेरी अपॉइन्टमेंट हुई थी और जैसे मै जलगाँव मे पहुँचा उस वक्त मुझे पहला फोन जो आया था जलगाँवकर का तो भवरलाल भाऊ थे। मुझे बहोत आश्चर्य हुवा की भाऊ का फोन भाऊ को बताया मैने क्या भाऊ क्या है? नहीं नहीं बोले मै तुम्हारा अभिनंदन करना चाहता हूँ। मुझे लगा की बडी ट्रायल चलाने का एक जिम्मेदारी मुझपर सौंप गयी थी। और इसीलिए मुझे काँग्रेस्युलेशन कहना है। लेकिन

भाऊ ने कहा की नही आप आतंकवादी के खिलाफ जो लड़ रहे है उसे मैं बहोत प्रसन्न हूँ। देशप्रियता और एक इन्डस्ट्रीयालिस्ट के प्रति। ये हमारी देश के प्रति भावना होना ये मुझे लगता है। बडा सम्मान भाऊ के पास एक अच्छा गुण था। आपको पता नही होगा की १९९३ मे बाँब ब्लास्ट ये अजमल कसाब की ट्रायल मे जो मेरा आर्ग्युमेंट का फस्ट कव्हर पेज था वो फस्ट कव्हर पेज बंबई मे कई लोगोने पुछा था, सिबीआय मे ताकी पुछा भी था की आपने कव्हर पेज कहाँ से बनाया है? इसकी आयडीया कहाँ से आयी? तब तो मैंने किसी को मेरा राज नही खोला था। लेकिन आज आपके सामने वो राज भी खोल देता हूँ वो कव्हरपेज हमारे जलगाँव मे जैन इंडस्ट्री मे बनता था। और जिसकी लाईन, जिसका फायनलाईज अनिल करते थे, मैं करता था, गिमी जो भाऊ के दोस्त थे और फायनल ऑप्ठव्हल भाऊ करते थे। ये कैसा होना चाहिए? की भाऊ का एक विचार था की हमारी देश के जनता मे हमारा किसान ये जब सबसे बडा लक्ष है। और किसान की युटिलिटी के लिए हमने क्या करना चाहिए? भाऊ तो एक इंडस्ट्रीयालिस्ट थे लेकिन तत्त्वविता भी थे। जहाँतक मैं मानता हूँ की लॉजीकल डिडक्शन्स और लॉजीकल इन्फरन्स जिसे सायकॉलॉजी मे लॉजीक कहा जाता है इसे भाऊ का एक अच्छा गुण प्रदर्शित होता था की अच्छे समय से किस तरह से लॉजीकल इन्फरन्स निकालना। भाऊ का एक सपना था। और मुझे याद है की भाऊ ये कहते थे की उज्ज्वल मुझे जलगाँव ऐसे नक्सेपर लेके जाना है ताकी कोई भी पुछ सके की जलगाँव कहा है? किसी को पुछने की जरूरत

नही पडेगी। और मुझे इस बात की बहोत खुशी है की भाऊने जो सपने देखे थे वो साकार हो गये हैं।

सपनो तो वो नही जो हिंद मे आते हैं,
सपनो तो वो है जो उमीद नही आने देते है।

और इस सपनो से भाऊ एक पक्ष थे। भाऊ हमेशा मुझे कहते थे की उज्ज्वल नाम कमाना ये बहोत आसान बात है। लेकिन नाम कमाने के बाद उसका मेन्टेन करना ये अपनी जिम्मेदारी होती है। और भाऊ की ये जिम्मेदारी आज भाऊ के चारों बच्चोने जिस तरह से उठाई है। मैं बहोत अर्चंबित हूँ। मैं एक फौजदारी क्रिमिनल ट्रायल मे प्रॉक्टिस करनेवाला लॉयर होने के कारण हमेशा मैं देखता हूँ की बॉडीलॉग्वेज हो या चलने का ढंग हो, बोलने का ढंग हो, इसे आदमी कैसे पता। मैंने आज भी जो बडे इन्डस्ट्रीयालिस्ट देखे है, दिलीपजी मैं मेरा तजुर्बा कह रहा हूँ की बडे इन्डस्ट्रीयल हाऊस मे जो बडा मेन आदमी रहता है, शक्स रहता है, उसके जाने के बाद वो फॅमिली पुरी बिखर जाती है। लेकिन आज मैं गर्व से कहूंगा की हमारे ये चारों लोग जो अशोकजी है, अनिलजी है, अतुलजी है, और अजितजी है, और ये चारो भाईने जिस तरह से रामराज्य आज निर्माण किया है। मैं चारों भाईयों को बहोत बधाई दुंगा। आज भाऊ निश्चित रुप से खुश होंगे। और कभी भी आपको किसी की भी तकलिफ हुई तो मैं चारों भाईयों को यहाँ कहूंगा क्रिमिनल ट्रायल मे प्रॉक्टिस कर रहा हूँ तो किसीने धमकाया तो हम आपके साथ है इतना जरूर कहूंगा।



भवरलाल जैन यांच्या अर्धाकृती पुतळ्याचे अनावरण करताना डॉ. मुन्शी, सुरेश जैन, ना. धों. महानोर, दिलीप पिरामल, अशोक जैन, दलुभाऊ व इतर मान्यवर.

तुषार गांधी, महात्मा गांधीचे पणतू



नमस्कार, जब भी यहाँ आता हूँ तो बहोत अचंबित हो जाता हूँ। क्योंकि एक इन्सान इतनी सारी चीजों की कल्पना कर सके। और कल्पनाही नहीं उसको सार्थक बना सके ये यहाँ आनेपरही पता चलता है। मैंने जिंदगी में कई लोगों को देखा है कई लोगों को मैं मिला हूँ। बहोत कम ऐसे लोग होते हैं जो अपनी नजरों से ज्यादा अपनी कल्पना को देखते हैं और उसको सार्थक करते हैं। और यहाँ आनेपर और भाऊ के साथ जो थोड़ा बहोत मुझे अवसर मिला काम करने का तब ऐसे इन्सान का साक्षात्कार मुझे हुवा की जो कल्पना करता था और क्षमता रखता था की अपने यहाँ पे मैं उस कल्पना का साक्षात्कार करके दिखा दूँ। ये बहोत कम लोग होते हैं जो ऐसे कर सकते। बहोत कम लोग ऐसे होते हैं जिनको अपने हौदे के खौफ़ से ज्यादा उनकी कार्यक्षमता का खौफ़ होता है। भाऊ ऐसे थे वो जब भी किसी के उपर कोई रिस्पोन्सिबिलीटी डालते थे तो वो रिस्पोन्सिबिलीटी लेनेवाला इन्सान इस चीज से ज्यादा डरता था की ये भाऊने कहा है तो नहीं करूंगा तो सजा होगी इसका डर नहीं था उनको। उनको ये डर होता था की कही मैं वो काम खुद नहीं कर सकता तो भाऊ खुद खडे होके ये काम करके दिखा देंगे। ऐसे लोग भी बहोत कम हुवा करते की जिनके बारे में लोगों को ये एतबार हो की इनको हमारी जरूरत नहीं है। अगर है तो हमे इनकी

जरूरत है। क्योंकि हम अपने आपको प्रूव्ह करना चाहते हैं की कुछ हम भी कर सकते हैं। जो काम भाऊने किया तो जब मेरेको पहलीबार मिले तो मुझे कहा की ये सब यहाँ होगा। तो मन ही मन मैंने सोचा था की ये बाते तो बहोत सुनी हैं। पर इतने कम समय में जो गांधी तीर्थ की मैं बात करू तो वो जो पुरी एक संस्था बना दी इन्होंने और सिर्फ एक मॉन्युमेंट नहीं एक संस्था ऐसी जो जिवंत संस्था है जिसके काम का असर आज सोसायटी में हो सकता है।

बापु की स्मृती के साथ बहोत सारे मॉन्युमेंट्स जुडे हुवे हैं। उनके जीवन में जो भी स्थलों के साथ उनका कनेक्शन है वहाँ एक तीर्थ बन गया। लेकिन आज जिवंत मॉन्युमेंट अगर किसीने बनाया हो तो भाऊने यहाँपर बनाया गांधी तीर्थ में की जहाँ से बापु के विचार को अमर करने की एक कोशिश जारी है। ये बहोत क्वचित जगह पे ये हुवा है। और सिर्फ हुवा नहीं उसको जिवंत रखा गया है। मुझे बहोत फक्र होता है की मुझे ये अवसर मिला की आज भाऊ की वाटीका में मेरे हातो मुझे एक पौधा लगाने का अवसर मिला। एक अस्तित्व उस वाटीका में आ गया। क्योंकि ऐसे लोगों के साथ असोसिएट होने के लिए भी आपको एक स्टेट्स की जरूरत होती है। बापुने अपने जीवन के बारे में कहा था की मेरा जीवनही मेरा संदेश है। और अगर किसीने उसको सार्थक किया हो तो मुझे लगता है की भाऊने किया है की उनके जीवन में जो कार्य उन्होंने किया है वही उनकी धरोहर है, वही उनकी लेगेसी है जो आगे चलती रहेगी। किसी को भाऊ का वील कभी पढने की जरूरत नहीं पडेगी। उनका कार्य देख लो तोही पता चल जायेगा की कौनसी दिशा, कौनसा मार्ग, कौनसा रास्ता वो आपको दिखा रहे है। ये बहोत कम लोगों के साथ होता है। और इसीलिए जो मैंने कहाँ



शुरूवात मे क्योकि मुझे हमेशा यहाँ आता हूँ तब -

I am a mest, I just can't believe it. Today I was standing on that Hill I was amage that what I saw. Because everything that I saw here. Told me that it was the achievement of one mans dream.

एक सपने को सार्थक करने की शक्ती एकही इन्सान की थी जिसने यहाँ, गुजराती मे हम लोग कई बार ये कहते है शुन्य मे से सृष्टी पैदा करना। और उस शुन्य मे से सृष्टी उस आदमी के व्हीजनने की तैयार जो आज यहाँ से सब जगह पे दिख रही है। और मै जानता हूँ की भाऊ न हो तो भी उनकी जो लेगसी उनके परिवार मे आयी है वो इस युनिव्हर्सिटी को भी बेहतरीन से बेहतरीन युनिव्हर्सिटी बनाके हमको दिखा देगी, क्योकि ये जिम्मेदारी भाऊने दी है। और भाऊ जो जिम्मेदारी देते थे वो कोई हल्कीफुल्की नही थी, वो निभानीही पडती थी सबको। ये बापु के बारे मे जैसे लोग बोलते है वो मजाक मे ये कहते है की मजबुरी का नाम महात्मा गांधी है लेकिन असली मे ये होता है की महात्मा गांधीही मजबूरी है। वैसे भाऊ की लेगसी ऐसी मजबुरी है जो हमे निभानीही पडेगी उनके साथ जो जो लोग असोसिएट हुवे हैं, उनको सबको ये करना होगा और अपना योगदान देना होगा। और इसीलिए मैं सारे भाईयों का और परिवार का शुक्रिया अदा करता हूँ की भाऊ के बाद भी उनकी लेगसी के साथ जुडने का मुझे ये अवसर दिया गया। और इसी जगह पे ये तीर्थ मे ही, मुझे नही लगता की भाऊ की आत्मा कही ओर वैकुण्ठ मे गयी होगी। वो यही पर रहेगी क्योकि यही के वो सिपाई है, यही के वो सृष्टी सर्जक है। और वो यही रहकर उस सृष्टी को बढायेंगे, फैलायेंगे, और उसको संभालके रखेंगे।

पद्मश्री ना. धों. महानोर, ज्येष्ठ निसर्ग कवी



नमस्कार, ५०-६० वर्ष किंवा लहानपणापासून जिथं जिव्हाळा प्रेम आणि निस्सिम प्रेम हे दुर्मिळ असत अशा ठिकाणी ज्या भाऊंनी त्यांच्या कुटुंबांनी आणि सगळ्यांनी मला जे दिल आज भाऊ नाही आहेत. पण अस म्हणता येणार नाही की भाऊ

नाही आहेत. भाऊंच्या आठवणींना नमस्कार करून, विचारांना नमस्कार करून मी आपल्यासमोर उभा आहे. या सगळ्या गोष्टी हातात हात घेऊन आम्ही जगलो. आणि आता दादांनी किंवा उरलेल्या लोकांनी जे सांगितल की शेती आणि शेती हा केंद्रबिंदु आहे, नुसता गावाचा नाही, नुसता राज्याचा नाही, देशाचा नाही. देश जर उभा राहिल तर शेतीतून उभा राहिल. देश जर मोडला तर शेतीतूनच मोडेल. जर शेती मोडली तर अस सांगणारे भाऊ आणि त्यांचा विचार घेऊन ते आणि आम्ही बरोबरीनं, मी माझ्या परीनं त्यांच्याबरोबर काम केल एवढीच गोष्ट आहे.

या तिर्थक्षेत्राला जी नावं दिली ती महाराष्ट्राची सर्व जाती, धर्म, पंथ विसरून न बोलवता जाणारे लोक फक्त पंढरपूरला आहेत. महाराष्ट्राची आणि देशाची जर कृषी पंढरी म्हणायची असेल तर ती जळगावला ही कृषी पंढरी आहे अस म्हणा. आणखी नावं देता येतील ना, हे अस तीर्थ क्षेत्र आहे की -

कोणती ना जात ज्यांची कोणता ना धर्म ज्यांना, दुःख भिजले दोन अश्रू माणसांचे.



माणसांना उभा करणारा माणूस हा आमच्यामध्ये होता म्हणून आम्ही उभे आहोत अस सगळा महाराष्ट्र आणि देश म्हणतो. त्यांची ही गोष्ट आहे. ज्या कविता मी लिहील्या अशा सगळ्यांच्या आहेत. आणि तुम्हाला माहिती आहे मी भाऊविषयी अधिक काही बोलायच नाही, कवितेच्या स्वरूपात थोडक्यात फक्त दोन-तीन कवितेचे तुकडे सांगतो आणि मग बोलणे संपवितो. हे सगळ जे आहे, जी कविता टिकली किंवा जी काही आज हे करता फक्त तिच्यामध्ये अग्रीकल्चर आहे आणि शेतकरी आहे म्हणून मी आहे, नाहीतर मलाही कोणी विचारल नसत मुंबई-पुण्यामध्ये आणि जळगावमध्ये. हे सगळ भाऊंच जे काही आहे ते हृदयत याच्यात आहे.

मी भवरलाल भाऊ जैन बोलतो, अशी एक कविता आहे.

काळ्या तांबड्या मातीचा टिळा दगड धोंडांना.

आम्ही भरला मरठ निळा,

कुठे तरी विसरलो मी नेमक अस होत.

येऊ दे पिकपाणी जन्म दुःखाच्या कारणी,

सोन सळी मातीतला गंध भरू दे अस्मानी।

काळ बर्बट जळोनी गंगा वाहू दे निर्मळ,

लाख चांदण्या गोंदून कधी भरू दे आभाळा।

अशी कविता ही घेऊन आलो आणि म्हणून ती सगळ्या शेतकऱ्यांची, जी भाऊंच्या आत्म्याची कविता-

या नभाने या भुईला दान द्यावे,

आणि या मातीतुनी चैतन्य गावे।

कोणती पुण्ये अशी येती फळाला,

जोधळ्याला चांदणे लखडून जावे।।

या नभाने या भुईला दान द्यावे,

आणि माझ्या पापणीला पूर यावे।

पाहता ऋतु गंध कांती सांडलेली,

पाखरांशी खेळ मी मांडून गावे।।

गुंतलेले प्राण या रानात माझे,

फाटकी ही झोपडी काळीज माझे।

मी असा आनंदूनी बेहोश होता,

शब्दगंधे तू मला बाहूत घ्यावे।।

आज चिंब झाली पावसाने दूर राने,

गर्द अशी ओली निळाई डोंगराने।

मुक्त बेहोशीत आम्ही गीत गातो,

वादळाचा देह आता झिंगल्याने।।

या पद्धतीच्या कविता खूप आहेत, नंतर कधीतरी बघू. फक्त भाऊंनी आले आणि परत गेले दुखण्यातून. आनंद माझ्या आयुष्यातला आहे, आणि दुःखाचाही भाग पण आनंदाचा आहे आणि पुन्हा परत आले नाही. पण माझ्या नातवाला सांगितल

की ही कविता दादाची आहे नामदेवची आहे करेक्ट करून घे. केली. पुन्हा सांगितल आणि पुन्हा मला शेवटचा जो फोन आहे इथे भेटले पुन्हा गेले. पण त्यांनी म्हणे नामदेव आता ही जी कविता आहे ना याच्यातून आयुष्य घडल. पण संपुर्ण दिशादर्शक काम हे बाकीचे सगळे करतील. मला पुर्ण आनंद आहे आणि विश्वास आहे की हे करतील. परंतु ही जी पुन्हा शेती आणि हे जे गाण आहे ना ते कशा पद्धतीने आपण ठरवू? सांगितल गेल नाही. उरलेल्यांना माहिती आहे सांगितल आणि ती कविता त्यांनी पुन्हा मला फोनवरून म्हणून दाखवली तिथून घरून तिथल्या आणि हॉस्पिटलमध्ये होतो की -

या शेताने लळा लाविला असा असा की

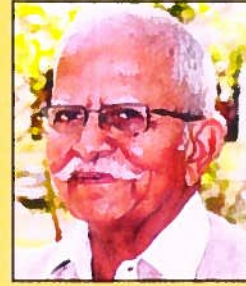
सुखदुःखाला परस्परंशी हसलोरडलो।

आता तर हा जीवच अवघा असा जखडला,

मी त्याच्या हिरव्या बोलीचा शब्द जाहलो ।।

डॉ. एन. के. ठाकरे, माजी कुलगुरू, उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ

सन्माननिय भाऊ व्यासपीठ आणि मित्रांनो, १९९० साल १५ ऑगस्टला उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाची जळगाव इथ



स्थापना झाली. आणि त्यानंतर माझी आणि भाऊंची ओळख झाली. जेव्हा हे विद्यापीठ स्थापन झाल तेव्हा या विद्यापीठाकडे एक इंच जा नव्हती आणि एक रुपया नव्हता. पण मला आज सांगायला आनंद वाटतो की ह्या जळगावात भाऊंसारखी मदत करणारी माणसं

होती. सुरेशदादांसारखी विद्यापीठाला वापरासाठी कापॅरेशनची किंवा म्युनिसीपालटीची भोईटे हायस्कूलची तीन मजली इमारत फुकट वापरायला दिली. आणि नुसतच त्यांनी साधी मदत केली नाही, तर भरभरून मदत केली. तिकडे त्यांच वाक्य लिहील तुम्ही जर आजुबाजुला पाहिल की भाऊंचे काही कोट्स आहेत. इथून तिसऱ्या नंबरच म्हणत की चांगल्या माणसाना, चांगल्या कामांना आपण मदत करू शकलो तर आपण स्वतःलाच मदत करत असतो. तर विद्यापीठाकडे पुरेसा निधी नव्हता म्हणून ९२ सालापासून भाऊंनी त्यांचा जीबीसी माझ्या ताब्यात देऊन टाकला. अस सर्वसाधारण बिझनेस करणारी, व्यापार करणारी मंडळी करत नसती, परंतु त्या माणसाची बांधिलकी शिक्षणाशी इतकी प्रचंड होती की त्यांनी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या उभारणीत प्रचंड मदत केली. जेव्हा जेव्हा उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ चांगल का झाल? याचा विचार केला जाईल तेव्हा तेव्हा भाऊ

किंवा हे जैन दोष जे आहेत किंवा इतरही बऱ्याच लोकांनी मदत केली त्यांची आम्हाला आठवण ठेवावी लागेल.

भाऊ माझ्यापेक्षा फक्त चार महिने आणि दहा दिवसांनी मोठे होते. माझ ८०वा पुढच्या वर्षी येईल २२ एप्रिलला, कोणी साजरा करणार नाही आणि त्याचाही मला आनंद आहे कारण तो आजच जवळजवळ साजरा केला जातो आहे अस मी मानतो इतकी भाऊंची आणि माझी जवळीक निर्माण झालेली होती. खर म्हणजे आम्ही स्वातंत्र्य मिळण्यापूर्वीच जन्मलेलो. आणि आम्ही जसे वाढत होतो तेव्हा हा महात्मा गांधींच्या त्यागाची जी काही एक स्प्रिंट होती वातावरणात, जी आग होती ती विझत आलेली होती. आणि अशा याच्यात आम्ही वाढत असताना समाज कसा बनत होता. एक शाहीर सुंदर रीतीने त्याच वर्णन करतो की-

हम क्या थोडे शरीफ हुवे, सारी दुनिया बदमाश हुई।

म्हणजे गांधींच्या नंतर जे वातावरण निर्माण होत होत त्या वातावरणात बराचसा आपला जो समाज आहे तो बदमाशगिरीकडे जात होता. तर त्या समाजानं शरीफ रहाव म्हणून हा माणूस स्वतः नुसता शरीफ राहिला नाही तर त्याच्या परीसरत आजूबाजूला त्यांनी शरीफता निर्माण केली आणि त्याचा अनुभव मी घेतलेला आहे.

आता अलिकडच्या पिढीला माहिती नसेल, जुन्या जमान्यात आम्ही जेव्हा शिकायला पुण्या-मुंबईकडे जात असू तेव्हा खान्देशी भाऊंची फार चेष्टा करायचे सगळे लोक. खान्देशी भाऊ म्हणायचे चेष्टेनं, प्रेमानं नाही. आणि अशोक, अजित, अनिल, अतुल, तुम्ही ही जी भाऊंची सृष्टी निर्माण करता आहात तर मला परवानगी द्या की त्या खान्देशी भाऊंची ती सृष्टी पण आहे अस म्हणायची मला परवानगी द्या कारण भाऊ हे नुसतेच भवरलाल भाऊ नव्हते ते खान्देशी भाऊच झालेले होते संपूर्ण महाराष्ट्राचे भाऊ झालेले होते.

आणखी माझा संबंध त्यांच्या एका गोष्टीशी येतो, उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या संदर्भात मी बोललोच. ७ सप्टेंबर १९९३ ला आम्ही आमचा पहिला पदवीदान समारंभ घेतला. त्यात आशाताई भोसले आणि डॉ. भालचंद्र नेमाडे यांना आम्ही डिलीट पदवी दिली, मानद पदवी दिली, डॉक्टरेट दिली. त्या समारंभाला मी, सुरेशदादा, अरूणभाई, आपले मोठेभाऊ, सगळ्यांना मानानं बोलावल होत. आणि त्या समारंभाचे प्रमुख पाहुणे होते चंद्रशेखरजी धर्माधिकारी. आणि त्याच वर्षी गांधीजींच्या सव्वाशे जयंतीची सुरुवात ही होणार होती.

धर्माधिकाऱ्यांनी त्याचा उपयोग करून जे काही सुंदर भाषण केल त्याचा धागा पकडत ९-११ ला आमच्याकडे पण जळगावच्या इतिहासात ९-११ फार महत्त्वाचा आहे. कारण ९-११ ला पहिला टिकाव विद्यापीठाच्या परिसरात मारला गेला. आणि त्या ९-११ च्या सेवेत शरद पवारजी ते टिकाव माणपला आले होते. तर मोठ्याभाऊंनी मला एक चिठ्ठी लिहून दिली की आजच्या या सभेत महात्मा गांधींच तीर्थ इथे एक केंद्र मोठ उमविच्या ठिकाणी किंवा मी माझ्या परीने करीन त्यासाठी तुम्हाला जेवढे लाख रुपये लागतील तेवढे लाख देण्याच मी वचन देतो आहे. आणि त्यातून मग हे इथल महात्मा गांधी तीर्थ जे आहे ते निर्माण झाल. आणि जेव्हा त्याच उद्घाटन झाल महामहिम राष्ट्रपतींच्या हस्ते तेव्हा धर्माधिकारी साहेबांनी मला फोन करून सांगितल की कदाचित तुमच्या पहिल्या पदवीदान समारंभाला मला बोलावल नसत आणि भाऊ आले नसते तर हे तीर्थही झाल नसत. मला वाटत या गोष्टीचा मी उल्लेख करतो. भाऊ माझे मित्रच झाले होते त्यांना जेव्हा जेव्हा अस्वस्थ वाटायच तेव्हा माझ्याकडे यायचे. मला वाटत भाऊ दुसऱ्यांकडे स्वतःहून जाण हे फार कमी करायचे अशी माझी माहिती आहे. त्यांना वाचनाच वेड होत, पुस्तकांच वेड होत. मलाही तसच वेड आहे आणि सगळ्यात मोठ वेड मी तर म्हणून की त्यांना गांधीच जेवढ होत तेवढच मला आपल्या त्या महात्मा गांधींच वेड आहे. त्यामुळे आम्ही बांधले गेलो आणि अशा सुंदर सोहळ्याला या चारही बंधुंनी मला बोलावल त्याबद्दल आभार मानतो. भाऊंना अभिवादन करतो. आणि जैन इरिगेशन मागे पडायला नको हा दम देतो त्यांना. कारण जैन इरिगेशन मागे पडण म्हणजे सारा खान्देश मागे पडण म्हटल जाईल त्याची आपण आठवण ठेवा.

■ ■



जैन सोलर पंप

इंधन व विजेशिवाय आपल्या शेतास पाणी देणे शक्य!



शेतकरी बांधवांना सिंचनासाठी महाराष्ट्र राज्य वीज वितरण महामंडळ (MSEDCL) द्वारा प्रमाणित, जैन इरिगेशन सिस्टीम्स लि. कडून ३, ५ एच.पी. वी.एल.डी.सी. सबमर्सिबल पंप किंवा ३,५,७.५ एच.पी.ए.सी. सबमर्सिबल पंप पुरवठा करण्यात येईल.

| सोलर सबमर्सिबल पंप | किंमत (रु./पंप) | शेतक-याचा वाटा 5 एकर पर्यंत (रु./पंप) | शेतक-याचा वाटा 10 एकर पर्यंत (रु./पंप) |
|-----------------------------|-----------------|---------------------------------------|--|
| 3000 वॉट (3 एच.पी. ए.सी.) | 3,24,000 | 16,200 | 48,600 |
| 3000 वॉट (3 एच.पी. डी.सी.) | 4,05,000 | 20,250 | 60,750 |
| 4800 वॉट (5 एच.पी. ए.सी.) | 5,40,000 | 27,000 | 81,000 |
| 4800 वॉट (5 एच.पी. डी.सी.) | 6,75,000 | 33,750 | 1,01,250 |
| 6750 वॉट (7.5 एच.पी. ए.सी.) | 7,20,000 | 36,000 | 1,08,000 |

शासनाने सौर कृषि पंप वाटप करण्यासंबंधी जैन इरिगेशन सिस्टीम्स लि. सोबत करार केलेला आहे.

खाली नमुद केलेले सर्व शेतकरी या योजनेस पात्र आहेत.

- धडक सिंचन योजनेअंतर्गत विहिरीचा लाभ घेतलेले/ लाभार्थी शेतकरी
- अतिदुर्गम भागातील शेतकरी
- महावितरण कंपनीतर्फे पैसे भरून प्रलंबित ग्राहकांपैकी ज्यांना तांत्रिक अडचणीमुळे नजीकच्या काळात वीजपुरवठा शक्य नाही असे शेतकरी
- प्रथम येणा-यास प्राधान्य देण्यात येईल.
- वैयक्तिक किंवा सामुदायिक शेतकरी व विहिरी यासाठी 3 एचपी क्षमतेपासून सोलर पंप गरजेप्रमाणे बसविता येतील.
- बोअरवेल असलेल्या शेतक-यांनाही ह्या योजनेचा फायदा घेता येईल.
- राज्यातील अकोला, अमरावती, वाशिम बुलढाणा, यवतमाळ व वर्धा या आत्महत्याग्रस्त जिल्ह्यातील शेतकरी.
- विद्युतीकरणासाठी वन विभागाचे ना-हरकत प्रमाणपत्र मिळत नसलेल्या भागातील शेतकरी.
- ह्या अनुदान योजनेसाठी महाराष्ट्र राज्य वीज वितरण महामंडळ (MSEDCL) कडे नाव नोंदणी करणे.
- सोलर पंप आस्थापित झाल्यापासून 10 वर्षांनंतर इच्छुक शेतकरी विद्युत पुरवठा/जोडणी घेऊ शकतो.

अनुदानास पात्र 20 जिल्हे

- अकोला • अमरावती • बुलढाणा
- बीड • भंडारा • वाशिम • वर्धा
- नागपूर • गोंदिया • चंद्रपूर
- गडचिरोली • जालना • जळगाव
- उस्मानाबाद • नाशिक • नंदुरवार
- ठाणे • रत्नागिरी • यवतमाळ
- रायगड

जैन
सोलर पंप™

जैन इरिगेशन सिस्टीम्स लि.
कल्पना कल्पनी. इत्यादिवा भेद करी.

जैन ग्रोन एनर्जी

जळगांव. फोन: ०२५७-२२५८०९९, फॅक्स: २२५८९९९; टोल-फ्री: ९८००५९९३०००
ई-मेल: solarpump@jains.com; इंटरनेट: www.jains.com

प्रथम येणा-या १०,००० शेतक-यांना शासनाकडून सोलर पंपासाठी ९५% अनुदान ५ एकरपर्यंत व ८५% अनुदान १० एकर पर्यंत उपलब्ध. कृपया जवळच्या महाराष्ट्र राज्य वीज वितरण महामंडळ (MSEDCL) कार्यालयास त्वरीत भेट द्या!

कृपया अधिक माहितीसाठी जैन इरिगेशन प्रतिनिधींशी संपर्क साधावा: बुलढाणा : ९४२२७७६७८७, ९४२२७७४३९४; अमरावती : ९४२२७७६९४६, यवतमाळ: ९४२२७७५९३६, ९४२२७७५६४९; वाशिम: ९४२२७७४३३५; वर्धा: ९४२२७७५९४०, ९४२२७७४७७३; अकोला: ९४२२७७३८३७; नागपूर: ९४२२७७४२७९, ९४२२७७४५७३; बीड / उस्मानाबाद: ९४२२७७३९०२, ९४२२७७४६९०; भंडारा / गोंदिया: ९४२२७७३९९८, ९४२२७७४६८४; जालना: ९४२२७७३९५२; जळगांव: ९४०३६९५८४५, ९४०४९५३३३; नाशिक: ९४२२७७४९८९, ९४२२७७४७३८; चंद्रपूर / गडचिरोली : ९४२२७७४९५४, ९४२२७७४८८५; नंदुरवार: ९४२२७७४९९४, ९४२२७७४८९७; ठाणे / रायगड / रत्नागिरी: ९४२२७७४२९२, ९८७०९९०७५३.